रविवार 8 सितंबर, 2019

विषय — ईसा मसीह

स्वर्ण पाठ: I कुरिन्थियों 15 : 10

"परन्तु मैं जो कुछ भी हूं, परमेश्वर के अनुग्रह से हूं: और उसका अनुग्रह जो मुझ पर हुआ, वह व्यर्थ नहीं हुआ परन्तु मैं ने उन सब से बढ़कर परिश्रम भी किया: तौभी यह मेरी ओर से नहीं हुआ परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से जो मुझ पर था।"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 8 : 1-6

1 हे यहोवा हमारे प्रभु, तेरा नाम सारी पृथ्वी पर क्या ही प्रतापमय है! तू ने अपना वैभव स्वर्ग पर दिखाया है।
2 तू ने अपने बैरियों के कारण बच्चोंऔर दूध पिउवों के द्वारा सामर्थ्य की नेव डाली है, ताकि तू शत्रु और पलटा लेने वालों को रोक रखे।
3 जब मैं आकाश को, जो तेरे हाथों का कार्य है, और चंद्रमा और तरागण को जो तू ने नियुक्त किए हैं, देखता हूं;
4 तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले?
5 क्योंकि तू ने उसको परमेश्वर से थोड़ा ही कम बनाया है, और महिमा और प्रताप का मुकुट उसके सिर पर रखा है।
6 तू ने उसे अपने हाथों के कार्यों पर प्रभुता दी है; तू ने उसके पांव तले सब कुछ कर दिया है।

पाठ उपदेश

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

बाइबल

1. यशायाह 1 : 18

18 यहोवा कहता है, आओ, हम आपस में वादविवाद करें: तुम्हारे पाप चाहे लाल रंग के हों, तौभी वे हिम
की नाईं उजले हो जाएंगे; और चाहे अर्गवानी रंग के हों, तौभी वे ऊन के समान श्वेत हो जाएंगे।

2. यशायाह 55 : 1-3, 6, 7

1 अहो सब प्यासे लोगो, पानी के पास आओ; और जिनके पास रूपया न हो, तुम भी आकर मोल लो और
खाओ! दाखमधु और दूध बिन रूपए और बिना दाम ही आकर ले लो।
2 जो भोजनवस्तु नहीं है, उसके लिये तुम क्यों रूपया लगाते हो, और, जिस से पेट नहीं भरता उसके लिये
क्यों परिश्रम करते हो? मेरी ओर मन लगाकर सुनो, तब उत्तम वस्तुएं खाने पाओगे और चिकनी
चिकनी वस्तुएं खाकर सन्तुष्ट हो जाओगे।
3 कान लगाओ, और मेरे पास आओ; सुनो, तब तुम जीवित रहोगे; और मैं तुम्हारे साथ सदा की वाचा
बान्धूंगा अर्थात दाऊद पर की अटल करूणा की वाचा।
6 जब तक यहोवा मिल सकता है तब तक उसकी खोज में रहो, जब तक वह निकट है तब तक उसे
पुकारो;
7 दुष्ट अपनी चालचलन और अनर्थकारी अपने सोच विचार छोड़कर यहोवा ही की ओर फिरे, वह उस पर
दया करेगा, वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे और वह पूरी रीति से उसको क्षमा करेगा।

3. यूहन्ना 3: 16-18 (*से*:)

16 क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस
पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।
17 परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा, कि जगत पर दंड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि
जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।
18 जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती:

4. लूका 7 : 36-50

36 फिर किसी फरीसी ने उस से बिनती की, कि मेरे साथ भोजन कर; सो वह उस फरीसी के घर में जाकर भोजन करने बैठा।
37 और देखो, उस नगर की एक पापिनी स्त्री यह जानकर कि वह फरीसी के घर में भोजन करने बैठा है, संगमरमर के पात्र में इत्र लाई।
38 और उसके पांवों के पास, पीछे खड़ी होकर, रोती हुई, उसके पांवों को आंसुओं से भिगाने और अपने सिर के बालों से पोंछने लगी और उसके पांव बारबार चूमकर उन पर इत्र मला।
39 यह देखकर, वह फरीसी जिस ने उसे बुलाया था, अपने मन में सोचने लगा, यदि यह भविष्यद्वक्ता होता तो जान लेता, कि यह जो उसे छू रही है, वह कौन और कैसी स्त्री है? क्योंकि वह तो पापिनी है।
40 यह सुन यीशु ने उसके उत्तर में कहा; कि हे शमौन मुझे तुझ से कुछ कहना है वह बोला, हे गुरू कह।
41 किसी महाजन के दो देनदार थे, एक पांच सौ, और दूसरा पचास दीनार धारता था।
42 जब कि उन के पास पटाने को कुछ न रहा, तो उस ने दोनो को क्षमा कर दिया: सो उन में से कौन उस से अधिक प्रेम रखेगा।
43 शमौन ने उत्तर दिया, मेरी समझ में वह, जिस का उस ने अधिक छोड़ दिया: उस ने उस से कहा, तू ने ठीक विचार किया है।
44 और उस स्त्री की ओर फिरकर उस ने शमौन से कहा; क्या तू इस स्त्री को देखता है मैं तेरे घर में आया परन्तु तू ने मेरे पांव धाने के लिये पानी न दिया, पर इस ने मेरे पांव आंसुओं से भिगाए, और अपने बालों से पोंछा!
45 तू ने मुझे चूमा न दिया, पर जब से मैं आया हूं तब से इस ने मेरे पांवों का चूमना न छोड़ा।
46 तू ने मेरे सिर पर तेल नहीं मला; पर इस ने मेरे पांवों पर इत्र मला है।
47 इसलिये मैं तुझ से कहता हूं; कि इस के पाप जो बहुत थे, क्षमा हुए, क्योंकि इस ने बहुत प्रेम किया; पर जिस का थोड़ा क्षमा हुआ है, वह थोड़ा प्रेम करता है।
48 और उस ने स्त्री से कहा, तेरे पाप क्षमा हुए।
49 तब जो लोग उसके साथ भोजन करने बैठे थे, वे अपने अपने मन में सोचने लगे, यह कौन है जो पापों को भी क्षमा करता है?
50 पर उस ने स्त्री से कहा, तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया है, कुशल से चली जा॥

5. यूहन्ना 1 : 12 (वे सभी)-14, 16

12 ... जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।
13 वे न तो लोहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं।
14 और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उस की ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।

16 क्योंकि उस की परिपूर्णता से हम सब ने प्राप्त किया अर्थात अनुग्रह पर अनुग्रह।

6. इफिसियों 2 : 4 (परमेश्वर), 5

4 बट भगवान ने जो दया का धनी है; अपने उस बड़े प्रेम के कारण, जो से हमने कहा कि प्रेम किया।
5 जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया; (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है।)

7. रोमियो 8 : 1-4

1 सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं: क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं।
2 क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।
3 क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उस को परमेश्वर ने किया, अर्थात अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पाप के बलिदान होने के लिये भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी।
4 इसलिये कि व्यवस्था की विधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए।

8. तीतुस 2 : 11-14

11 क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है।
12 और हमें चिताता है, कि हम अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेर कर इस युग में संयम और धर्म और भक्ति से जीवन बिताएं।
13 और उस धन्य आशा की अर्थात अपने महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रगट होने की बाट जोहते रहें।
14 जिस ने अपने आप को हमारे लिये दे दिया, कि हमें हर प्रकार के अधर्म से छुड़ा ले, और शुद्ध करके अपने लिये एक ऐसी जाति बना ले जो भले भले कामों में सरगर्म हो॥

9. II कुरिन्थियों 12: 9 (*से 1st.*)

9 और उस ने मुझ से कहा, मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 589 : 9 (परमेश्वर)-10 (*से और*), 10 (*आदमी*)-11

ईश्वर सभी अस्तित्व का दिव्य सिद्धांत है, और ... आदमी उसका विचार है, उसकी देखभाल का बच्चा है।

2. 475: 7-9, 14-16 (*से*;)

पवित्रशास्त्र हमें सूचित करता है कि मनुष्य परमेश्वर की छवि और समानता में बना है। ... वह ईश्वर का यौगिक विचार है, जिसमें सभी सही विचार शामिल हैं; भगवान की छवि और समानता को दर्शाता है कि सभी के लिए सामान्य शब्द;

3. 332 : 4 (पिता)-5

पिता-माता देवता का नाम है, जो उनकी आध्यात्मिक रचना के उनके कोमल संबंधों को इंगित करता है।

4. 6 : 17-18

"भगवान प्यार है।" इससे अधिक हम पूछ नहीं सकते, उच्च हम नहीं देख सकते हैं, आगे हम नहीं जा सकते।

5. 333 : 19-23

ईसाई युग से पहले और बाद में सभी पीढ़ियों के दौरान, आध्यात्मिक विचार के रूप में, मसीह, - भगवान का प्रतिबिंब, - शक्ति और अनुग्रह के कुछ उपाय के साथ आया है जो सभी मसीह, सत्य को प्राप्त करने के लिए तैयार हैं।

6. 42 : 1-2 (*से*,)

ईश्वरीय और वैज्ञानिक रूप से यीशु के जीवन ने साबित कर दिया कि ईश्वर प्रेम है,

7. 35 : 30 *केवल*

प्रेम का डिजाइन पापी को सुधारना है।

8. 494 : 15 (वह)-19

कृपा का चमत्कार प्रेम का कोई चमत्कार नहीं है। यीशु ने शारीरिक शक्ति के साथ-साथ आत्मा की असीम क्षमता की अक्षमता का प्रदर्शन किया, इस प्रकार मानव भावना को अपने स्वयं के दोषों से भागने में मदद करने और दिव्य विज्ञान में सुरक्षा की तलाश करने के लिए।

9. 362 : 1-7

यह लुका के सुसमाचार के सातवें अध्याय से संबंधित है कि यीशु एक बार एक फरीसी के सम्मानित अतिथि थे, जिसका नाम साइमन था, हालांकि वह साइमन शिष्य के बिल्कुल विपरीत था। जब वे भोजन पर थे, तो एक असामान्य घटना हुई, जैसे कि पूर्वी उत्सव का दृश्य बाधित होता है। एक "अनजान महिला" अंदर आई।

10. 363 : 1-24, 31-7

वह एक संगमरमर का जार पकड़े हुए था जिसमें महंगा और सुगंधित तेल था, — शायद चंदन का तेल, जो पूर्व में इस तरह के आम उपयोग में है। बंद जार को तोड़कर, उसने यीशु के पैर तेल से सुगंधित किए, उसके लंबे बालों के साथ उन्हें पोंछते हुए, जो उसके कंधों पर खुले लटक रहे थे, जैसा कि उसकी उम्र की महिलाओं के साथ प्रथागत था।

क्या यीशु ने औरत को अपमान के साथ देखा था? क्या उसने अपने आराध्य को ठुकरा दिया? नहीं! उसने उसे करुणापूर्ण माना। और न ही यह सब था। यह जानकर कि उनके आस-पास के लोग उनके दिल में क्या कहते थे, खासकर उनके मेजबान, — वे सोच रहे थे कि नबी होने के नाते, अति विशिष्ट अतिथि ने एक बार महिला की अनैतिक स्थिति का पता नहीं लगाया और उसे विदा नहीं किया, — यह जानकर, यीशु ने उन्हें एक छोटी कहानी या दृष्टांत के साथ फटकार लगाई। उन्होंने दो देनदारों का वर्णन किया, एक बड़ी राशि के लिए और एक छोटे के लिए, जिन्हें उनके सामान्य लेनदार द्वारा उनके दायित्वों से मुक्त कर दिया गया था। "उनमें से कौन उसे अधिक प्यार करेगा?" यह शमौन फरीसी के लिए मास्टर का प्रश्न था; और साइमन ने उत्तर दिया, "वह जिसे उसने अधिक माफ कर दिया।" यीशु ने जवाब स्वीकार किया, और इसलिए सभी को सबक सिखाया, जिसके बाद महिला के लिए यह उल्लेखनीय घोषणा के साथ, "तेरे पाप क्षमा हुए।"

इस प्रकार उसने अपने कर्ज़ को दिव्य प्रेम के लिए क्यों माफ़ किया? ... निश्चित रूप से इस तथ्य में प्रोत्साहन था कि वह निस्संदेह अच्छाई और पवित्रता के व्यक्ति के लिए अपना स्नेह दिखा रही थी, जो तब से सबसे अच्छा आदमी माना जाता है जो कभी इस ग्रह पर था। उनकी श्रद्धा शुद्ध थी, और यह उस व्यक्ति के प्रति प्रकट हुआ जो जल्द ही, सभी पापियों की ओर से अपने नश्वर अस्तित्व को समाप्त करने के लिए था, हालांकि वे यह नहीं जानते थे, उनके वचन और कार्यों के माध्यम से उन्हें कामुकता और पाप से मुक्त किया जा सकता है।

11. 364 : 17-31

क्या क्रिश्चियन वैज्ञानिकों ने सत्य की तलाश की क्योंकि साइमन ने उद्धारकर्ता की मांग भौतिक रूढ़िवाद के माध्यम से और व्यक्तिगत श्रद्धांजलि के लिए की थी? यीशु ने साइमन को बताया कि ऐसे साधकों को, जिन्होंने मसीहा के माध्यम से आए आध्यात्मिक शुद्धिकरण के बदले में छोटे इनाम दिए। यदि क्रिश्चियन वैज्ञानिक साइमन की तरह हैं, तो उनके बारे में यह भी कहा जाना चाहिए कि वे बहुत कम प्यार करते हैं।

दूसरी ओर, क्या वे सत्य, या क्राइस्ट के लिए अपना संबंध दिखाते हैं, उनके असली पश्चाताप से, उनके टूटे दिलों द्वारा, नम्रता और मानवीय स्नेह व्यक्त करके, जैसा कि इस महिला ने किया? यदि ऐसा है, तो यह उनके बारे में कहा जा सकता है, जैसा कि यीशु ने बिन बुलाए मेहमान के बारे में कहा, कि वे वास्तव में बहुत प्यार करते हैं, क्योंकि बहुत कुछ उन्हें माफ कर दिया गया है।

12. 67 : 23-24

अनुग्रह और सत्य अन्य सभी साधनों और विधियों से अधिक शक्तिशाली हैं।

13. 365 : 15-24

यदि वैज्ञानिक दिव्य प्रेम के माध्यम से अपने रोगी तक पहुँचता है, चिकित्सा कार्य एक यात्रा में पूरा किया जाएगा, और रोग सुबह की धूप से पहले ओस की तरह अपनी मूल शून्यता में गायब हो जाएगा। यदि वैज्ञानिक को अपने स्वयं के क्षमा को जीतने के लिए पर्याप्त क्रिस्टली स्नेह है, और एक प्रशंसा है जैसा कि मैगडलीन ने यीशु से प्राप्त किया, तब वह वैज्ञानिक रूप से अभ्यास करने और अपने रोगियों के साथ दया से पेश आने के लिए ईसाई है; और परिणाम आध्यात्मिक इरादे के अनुसार होगा।

14. 455 : 3-6

आत्म-निंदा और अपराध की एक मानसिक स्थिति या सच्चाई में एक लड़खड़ाहट और संदेह पर भरोसा करना बीमार को ठीक करने के लिए अनुपयुक्त परिस्थितियां हैं। ऐसी मानसिक अवस्थाएँ ताकत के बजाय कमजोरी का संकेत देती हैं।

15. 292 : 27-31

यह भौतिक मानसिकता, गलत दिमाग, नश्वर है। इसलिए मनुष्य का सर्वनाश होगा, क्या यह आध्यात्मिक वास्तविक मनुष्य के अपने ईश्वर के साथ अविवेकी संबंध के लिए नहीं था, जिसे यीशु ने प्रकाश में लाया था।

16. 476 : 28-5

जब यीशु ने परमेश्वर के बच्चों की बात की, न कि पुरुषों के बच्चों की, तो उन्होंने कहा, "परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है;" इसका मतलब है, सत्य और प्रेम वास्तविक मनुष्य में राज्य करता है, यह दर्शाता है कि भगवान की छवि में आदमी बेदाग और शाश्वत है। यीशु ने विज्ञान में सिद्ध पुरुष को सही ठहराया, जो उसे दिखाई दिया जहां पाप करने वाला नश्वर मनुष्य नश्वर प्रतीत होता है। इस सिद्ध पुरुष में उद्धारकर्ता ने परमेश्वर की अपनी समानता को देखा, और मनुष्य के इस सही दृष्टिकोण ने बीमारों को चंगा किया। इस प्रकार यीशु ने सिखाया कि ईश्वर का राज्य अक्षुण्ण, सार्वभौमिक है, और वह मनुष्य शुद्ध और पवित्र है।

17. 4 : 12-16

हमेशा अच्छा रहने की आदतन संघर्ष एक दैनिक प्रार्थना है। इसका मकसद उनके द्वारा लाए गए आशीर्वाद में प्रकट होना है, — वह आशीर्वाद, जो भले ही श्रव्य शब्दों में स्वीकार नहीं किया जाता है, हमारी योग्यता को प्यार का भागीदार बनाते हैं।

18. 26 : 1-9

जब हम यीशु को मानते हैं, और जो कुछ उन्होंने नश्वर के लिए किया, उसके लिए हृदय से आभार प्रकट करता है, — अपने प्यार के रास्ते को केवल महिमा के सिंहासन तक फैलाकर हमारे लिए रास्ता तलाश करने वाली व्यर्थ पीड़ा में, — फिर भी यीशु ने हमें व्यक्तिगत अनुभव नहीं दिया, अगर हम उसकी आज्ञाओं का ईमानदारी से पालन करें; और सभी ने अपने प्रेम के प्रदर्शन के अनुपात में पीने के लिए दुःखद प्रयास किए, जब तक सभी दिव्य प्रेम के माध्यम से मुक्त नहीं हो जाते।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।